Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सकट चौथ व्रत कथा ॥

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कुम्हार और वृद्धा की कथा ॥

यह उत्तर भारत में सुनाई जाने वाली सकट माता, कुम्हार और वृद्धा के पुत्र की लोककथा का सरल रूप है। कथा के प्रसंग अलग घरों और क्षेत्रों में बदलते हैं।

एक नगर में एक कुम्हार की भट्ठी थी। बार-बार प्रयास करने पर भी उसके मिट्टी के बर्तन ठीक से नहीं पकते थे। लोककथा में आता है कि एक अनुचित सलाह पर नगर के बच्चों को भट्ठी के संकट से जोड़ा जाने लगा। इस बात से लोगों में भय और दुःख फैल गया।

एक दिन एक वृद्धा के इकलौते पुत्र की बारी आई। उसी दिन माघ कृष्ण चतुर्थी, अर्थात सकट चौथ थी। वृद्धा ने गणेशजी और सकट माता को स्मरण किया। उसने अपने पुत्र को हिम्मत दी और दिन भर उसके सुरक्षित लौटने की प्रार्थना करती रही।

कथा में वर्णन है कि वह रात वृद्धा के लिए बहुत कठिन थी। नगर के लोग भी चिंता में थे। अगले दिन भट्ठी खोली गई तो बर्तन पक चुके थे और बालक सुरक्षित मिला। दूसरे बच्चों के भी सुरक्षित होने का प्रसंग इस लोककथा में आता है।

नगर ने इस घटना को सकट माता की कृपा माना और बच्चों को संकट में डालने वाली रीति समाप्त कर दी। वृद्धा ने कृतज्ञता से गणेशजी को प्रणाम किया और सबके बच्चों की कुशलता की प्रार्थना की।

॥ कथा का भाव और पाठ ॥

संकट में करुणा

इस कथा में माँ की चिंता और बच्चों की सुरक्षा की भावना है। इसका सबसे जरूरी संदेश यह है कि किसी भी बच्चे को हानि पहुँचाने वाली बात स्वीकार्य नहीं। प्रथा का अंत और सबका सुरक्षित रहना कथा का सुखद समापन है।

व्रत में कथा-पाठ

सकट चौथ की शाम गणेशजी और सकट माता की पूजा के बाद कथा पढ़ी या सुनी जाती है। फिर चंद्रोदय पर अर्घ्य देकर प्रसाद ग्रहण करने की परंपरा है। घर में प्रचलित दूसरा कथारूप हो तो उसी के अनुसार पाठ करें।

आस्था और देखभाल

कथा बच्चों के प्रति स्नेह और जिम्मेदारी याद दिलाती है। बच्चे की बीमारी या दुर्घटना को किसी के व्रत न रखने से न जोड़ें। वास्तविक सुरक्षा, देखभाल और जरूरत पर चिकित्सा सहायता आवश्यक है।

अंत में गणेशजी से परिवार और सभी बच्चों के मंगल की प्रार्थना करें। प्रसाद बाँटते समय बच्चों की उम्र और खानपान का ध्यान रखें।

॥ ॐ गं गणपतये नमः ॥